ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

मध्यप्रदेश के समाचार पत्रों की भूमिका (सामाजिक जनजागृति के विशेष संदर्भ में)

News Paper and Social Awareness of Madhya Parades From 1956 To 1975

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

रिचा दुबे
शोधार्थी
इतिहास विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर म.प्र., भारत

सारांश

समाचार पत्र, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक चेतना की दैनन्दिनी है। स्वातन्त्र्योत्तर अखबारों ने मानव मन में स्वाभिमान, आत्मरक्षा का भाव भरा तथा जनमानस में जनजागरण का संदेश प्रसारित किया। समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे की नींव पर नये भारत के नव–निर्माण की दिशा में समाचार पत्रों की उल्लेखनीय भूमिका रही। साहित्यिक, सांस्कृतिक अभिरुचि के विकास के साथ आर्थिक वैज्ञानिक उन्नति के लिए मध्यप्रदेश के अखबारों ने जिस भावना से चातुर्दिक सुधार सम्बन्धी कार्यों को सम्पादित किया वह अविस्मरणीय है।

Consciousness. Independent Newspaper filled the mind if self-respect and self-defense and spread the message of public awareness in the public. On the foundation of equality, freedom, and brotherhood, newspaper had a remarkable role in building a new India with the development of literary, cultural interest and economic scientific advancement, the spirit of the newspaper of Madhya Pradesh, which carried out the works related to the chauvinist, reform is unforgettable.

मुख्य शब्द : सामाजिक चेतना, जनजागरण, आर्थिक व वैज्ञानिक उन्नति, अखबारों की भूमिका।

Social Consciousness, Public Awareness, Economic and Scientific Progress, Role of Newspaper's

प्रस्तावना

समाचार–पत्र समाज का दर्पण होता है। समाज में जो हुआ या जो हो रहा है या आगे जो होगा–इस त्रिकाल से सम्बंधित समस्त हिसाब पत्र–पत्रिकाओं में चित्रित होता है। इस समस्त कार्यों के पीछे पत्रकार का विशेष सहयोग होता है समाचार–पत्रों में समाज को प्रभावित करने की जो क्षमता होती है उन समस्याओं का सशक्त स्वर अथवा प्रेणता भी पत्रकार ही होता है। वर्तमान में समाज में अखबारों के प्रति विशेष रुचि उत्पन्न होती जा रही है। सुबह होते ही पत्रों से दिनचर्या का आरंभ होता है। समाचार–पत्र जीवन में इस प्रकार महत्वपूर्ण हो गया है कि इसके बिना दिन के शुभारंभ की कल्पना भी नहीं की जा सकती। शिक्षित समाज अखबारों आदि का हो गया है समाज को यह भली–भाँति ज्ञात हो गया है कि लोकयुग में समाचार पत्र समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। समाज में प्रेस तथा समाचार पत्रों को लोकमत के वाहक या निर्माता के रुप में देखा जा सकता है। समाचार पत्र समाज की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है।

समाचार–पत्र का प्रमुख उद्देश्य सम्पूर्ण समाज में नवसंचार, सजीवता, जागरण, सक्रियता और गतिमयता का संदेश देना तथा इसका प्रचार व प्रसार करना है। अखबारों के उद्देश्यों के विषय में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का कथन हैः

''अखबारों का पहला उद्देश्य जनता इच्छाओं और विचारों को समझना तथा उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना तथा तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भिकतापूर्वक प्रकट करना है। समाज को बदलना ही समाचार पत्रों का उत्तरदायित्व है।''

विषय प्रवेश

समाचार का उद्देश्य समाज के प्रति विस्तृत परिक्षेत्र के अध्ययन से ज्ञात होता है कि समाज का प्रत्येक क्षेत्र अखबारों के अन्तर्गत आता है जिनके विषय

में समाचार पत्र अपना दृष्टिकोण प्रकट करते हैं। जैसे हिन्दू कोड बिल, किशोर–किशोरियों का मुक्त मिलन, जात–पाँत का भेद खत्म करने के अन्तर्जातीय विवाह, स्त्री–पुरुषों के समान अधिकार, शिक्षाके क्षेत्र में फैला भ्रष्टाचार, नवयुवकों और युवतियों में बढ़ती नशीले पदार्थों व मादप द्रव्यों का उपयोग आदि ज्वलंत विषयों पर समाचार–पत्रों का वर्णन प्राप्त होता है।

बांधव बन्धु (1947)

11 नवम्बर 1947 को कुंवर प्रदुम्न सिंह जी के प्रकाशन में प्रति शुक्रवार को यह पत्र निकलता था। यह पत्र देश सेवा प्रेस, प्रयाग से निकलता इस पत्र में सामयिक लेखों के अलावा रीवा राज्य के विभिन्न अंचलों के समाचार तथा साथ ही राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय समाचार भी छापे जाते थे। बांधव बन्धु के कुछ अंकों में बघेली भाषा की झलक भी देखने को मिलती थी।[28]

दिसम्बर 1947 को बांधव बन्धु का अंक 'शिक्षा विशेषांक' के रुप में निकला। इसी समय अखिल भारतीय शिक्षासम्मेलन का 23वां अधिवेशन रीवा में हुआ। उसी अवसर पर यह सम्पादकीय बघेली भाषा में लिखी गयी थी यह पत्र सामाजिक समस्याओं को भी उछालता था, इसके साथ ही समाज में व्याप्त दुर्गुणों के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द करता था। विद्यार्थियों के अन्दर सिनेमा के प्रति बढ़ती लोकप्रियता के कारण यह अखबार चिन्ता प्रकट करते हुए 28 दिसम्बर 1947 के अंक में लिखता है–

''निर्लज्ज काम क्रीड़ा, अष्लील अंग प्रदर्षन, कामोत्तेजक सम्भाषण एवं नृत्य और अभिनय तो केवल दर्षन की वस्तु है, वर्णन की नहीं। अतः यह स्पष्ट है कि इन कोमल विचार के बच्चों का भावी जीवन पर जिस प्रकार विशाक्त तथा भयावह बनाया जा रहा है समस्त जीवन काल का निर्माण क्षेत्र विद्यार्थी जीवन है, शोक। हमारे विद्यार्थी जितना सिनेमा के व्यक्तियों से परिचित होंगे उतने विद्वानों से नहीं, उनकी शुद्धता चरित्र आदि सभी नष्ट हो रहे हैं। इस प्रकार यह दोहरी तलवार हमारा विध्वंस कर रही है।''

इस प्रकार 'बांधव बन्धु' में राष्ट्रीय तथा सामाजिक समस्याओं के सन्दर्भ में अपनी सारगर्भित टिप्पणियों से समाज में एक नई चेतना लाने का सराहनीय प्रयास किया।

गरीब (1953)

'गरीब' समाचार पत्र का प्रकाशन 13 जून 1953 दिन शनिवार को प्रारंभ हुआ। विंध्यक्षेत्र की पत्रकारिता में 'गरीब' समाचार पत्र का महत्वपूर्ण स्थान है। अपने प्रवेषांक में ही यह समाचार पत्र अनेक सामाजिक विद्रुपताओं को स्पष्ट किया। प्रवेशांक कुल चार पृष्ठों का था, परन्तु इन चार पृष्ठों में अनेक जीवंत विचार एवं सम–सामयिक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया था। इस पत्र के माध्यम से प्रथम संपादकीय लेख से ही इसके उद्देष्य की झलक स्पष्ट हो जाती है। इसका श्रेय इस समाचार–पत्र के निर्भीक एवं यशस्वी पत्रकार श्री जागेष्वर प्रसाद पाण्डेय को ही जाता है। जिनका लेखन, जिनकी सोच जीवन की हर विविधताओं से जुड़ी थी।

'गरीब' निरन्तर प्रयत्नशील होकर अपने देश के निवासियों एवं पाठकों के विचार प्रान्तीय एवं केन्द्रीय सरकार के अधिकारियों के समक्ष रखने में कभी नहीं चूका।

'गरीब ने लिखा'– 'आज प्रदेश की बढ़ती हुई जनसंख्या, भुखमरी, बेरोजगारी, प्रशासन में भ्रष्टाचार एवं भूमिहीन किसानों की समस्या प्रदेश की उन्नति में एक बड़ा रोड़ा बन रही है, और उसके उन्मूलन हेतु 'गरीब' किसी भी समय, किसी भी विपत्ति का ध्यान न देकर बराबर जनता के साथ रहेगा। साथ ही साथ इस ओर सरकार को भी बुराईयों के उन्मूलन में पूर्ण सहयोग देगा।'

समाज में आ रहे बदलाव चाहे वह राजनैतिक हों या सामाजिक सभी को 'गरीब' में पर्याप्त स्थान मिलता था। 'गरीब' पत्र से यह भी ज्ञात होता है कि विंध्य के पिछड़े इलाके में धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी थी। इस पर टिप्पणी करते हुए 'गरीब' ने लिखा–

'छतरपुर– ज्ञात हुआ है कि ठकौरा ग्राम निवासी श्री दुर्गा अहिर को सपत्नीक ईसाई मिशनरियों ने धर्म परिवर्तन कराकर क्रिश्चियन बना लिया इस परिवार को ईसाई बनाने में मिशनरी के प्रचारक विगत कुछ दिनों से बहुत प्रयत्नशील थे।'

उक्त समाचार से यह भी ज्ञात होता है कि ईसाई मिशनरियाँ विंध्य के आदिवासियों को प्रलोभन देकर किस तरह से धर्म परिवर्तन कार्य में जुटी हुयी थी।

इस तरह 'गरीब' जहाँ शोषितों–दलितों के सामाजिक उन्नयन में महत्वपूर्ण योगदान देता रहा वहीं जातीयता, भ्रष्टाचार, कुनवापरस्ती आदि का विरोध कर राष्ट्रीय एकीकरण की धारा में जन–मानस से जुड़ने का आहवान किया।

जनजागृति (1956)

जनवरी 1956 में मासिक 'जनजागृति' का प्रकाषन आरंभ हुआ। इस पत्र के संपादक मंडल में श्री ना.प्र. आजाद, श्री शील कुमार निगम, श्री बी.एल.मेहता और श्री श्यामकुमार आजाद सम्मिलित थे। यह एक विचार प्रधान पत्रिका थी।

जनजागृति ने 25 अगस्त 1956 के लेख में लिखा– मध्यभारत में सामाजिक क्रांति हरिजन उत्थान के कार्य विषय पर सम्पादकीय लेख प्रस्तुत का लिखा– ''देश में प्रारम्भ रचनात्मक प्रवृत्तियों की प्रचलित मषाल को मजबूती से थामे रहने वाली संस्थाओं में हरिजन सेवक संस्था अपना विशिष्ट स्थान रखती है। अहिंसक इंकलाब के मसीहा महात्मा गाँधी चेतनाशील कर्मयोग ने इस संस्था को जन्म दिया। देश की पिछड़ी हुई जातियों में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने उत्पन्न होना गौरव का प्रतीक है। स्वाधीनता के पश्चात् छुआ–छूत के बन्धनों से मानव को मुक्ति के सचेष्ट करने वालों में संघ के निष्ठावान कार्यकर्त्ता जुटे हुए हैं।'' समाज की रचना मध्यभारतीय प्रवृत्तियों का क्रमबद्ध विचार दर्शन प्राप्त हो इसी आशय से 'जनजागृति' में प्रत्येक महीने हरिजन कल्याण कार्यों का विवरण प्रकाशित किया जाता था।

नये समाज की रचना के लिए अहिंसा, कानून और हिंसा ऐसे तीन प्रयोग अभी तक संसार में हुए हैं। घृणा से घृणा मिटाने अथवा दंड और भय अपनी बात

मनवाने का परिणाम बहुत बुरा होता है। सरकार द्वारा कानून रुपी बीज बो दिया गया है परन्तु इस बीज को अंकुरित और पल्लवित होने के लिए उपर्युक्त जमीन तैयार करना जनता का कार्य है यह जमीन अहिंसात्मक क्रांति द्वारा तैयार हो सकेगी। कानून का सहारा लेने से पूर्व समाज में व्यक्तिगत और जातिगत कटुता बनाकर अपना कार्य पूर्ण कर दिया अब समाज में इसकी सफलता के लिए वातावरण बनाना होगा यह कार्य हृदय परिवर्तन तथा समाज में जनजागृति द्वारा संभव हो सकता है। वर्तमान समय में समाज में घृणा न फैले बल्कि घृणा की समाप्ति में समानता की पवित्र भावना फैले सम्पूर्ण समाज का हृदय एक हो।

दण्डकारण्य समाचार (1959)

17 मार्च 1959 को मोतीश बनर्जी ने जगदलपुर से 'दण्डकारण्य समाचार' निकला। यह पत्र बस्तर क्षेत्र में हिन्दी पत्रकारिता की पहली किरण था। मोतीश बनर्जी के पश्चात् इस पत्र का प्रकाषन–संपादन कार्य तुषार कांति बोस ने किया। आदिवासी बहुल बस्तर के विकास में 'दण्डकारण्य समाचार' की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

इस पत्र के प्रधान संपादक और प्रकाशन इकाई के स्वामी श्री तुषार कांत बोस ने लिखा कि– ''इस पत्र में बस्तर के जनजीवन की समस्याओं, विकास की संभावनाओं और आदिवासियों की आवश्यकताओं सहित अन्य मुद्दों को पर्याप्त स्थान दिया गया। चूँकि रायपुर तथा अन्य स्थानों से प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं में बस्तर की हर छोटी–छोटी घटनाओं का ब्यौरा विस्तार से देना संभव नहीं था पिछले करीब पाँच दशकों की यात्रा से यह सिद्ध हो गया है कि बस्तर के स्वर को मुखारित करने के लिए यह पत्र एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है।''

उन दिनों बस्तर में बांग्लादेश से विस्थापित बंगालियों को भी छत्तीसगढ़ के कुछ स्थानों पर लाकर शिविरों में बसाया गया था। रायपुर के पास स्थित माना और दन्तेवाड़ा क्षेत्र में बंगालियों के बहुत से शिविर लगाए गए थे। बस्तर से प्रकाशित पत्रों को दण्डकारण्य विकास परियोजना के तहत बसाए गए इन शिविरों का भ्रमण कराया जाता था और अनेक पहलुओं पर आधारित समाचार प्रकाशित किए जाते थे। शिविर में रहने वालों के दैनिक जीवन, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार पर केन्द्रित समाचार बस्तर के सभी छोटे–बड़े पत्र–पत्रिकाओं की प्रमुख सामग्री के रुप में प्रकाशित होते थे।

मध्यप्रदेश संदेश (1966)

मध्यप्रदेश में राज्यों के पुनर्गठन के पश्चात् वर्ष 1956 में ग्वालियर से साप्ताहिक 'मध्यप्रदेश संदेश' प्रकाशित होना प्रारंभ हुआ। श्री रघुवीर सेवक दिक्षित, श्री गुरुप्रसाद दुबे, श्री हनुमानप्रसाद तिवारी, श्री डी.एन. बाजपेयी, श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त', श्री श्यामसुन्दर शर्मा, श्री अंबा प्रसाद श्रीवास्तव, श्री भगवती प्रसाद व्यास, श्री कालीदत्त झा, श्री विष्णु व्यास, श्री अरविंद चतुर्वेदी, श्री एस.जी. खिडवडकर एवं श्री एन.के. तिवारी आदि ने इसका संपादन किया।

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् ग्रामीण क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय विकास कदम रखा गया वह स्थानीय स्वायत्त शासन का है। ग्राम पंचायतों की स्थापना से ग्रामीण जनता के हित व प्रगति की संभावनायें अधिक संभव हो गई।

भारत की जनसंख्या में से 80 प्रतिशत जनता गाँवों में निवास करती है। उनके विकास के क्षेत्र में अनेक विषयों पर अखबार द्वारा संपादकीय लिखी गई। सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्रों के अनेक पहलुओं पर अखबार ने ध्यान आकर्षित किया। जो कि शहरों के मुकाबले में बहुत पीछे थे। इन विषयों में नारी शिक्षाजैसे प्रमुख विषयों को रखा गया।

इन विषयों में मध्यप्रदेश संदेश ने 27 अगस्त 1966 के अंक में छापा– ''शहरी क्षेत्रों में स्त्री शिक्षामें तीव्रप्रगति हो रही है आज वे अपनी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक गतिविधियों में न्याय संगत योगदान की कह पा रहीं हैं जो राष्ट्रहित में होना संभव है। ग्रामीण क्षेत्रों में नारी शिक्षा की स्थिति पूर्णतः शून्य है और यह बहुत हतोत्साहित करने वाली है। गाँवों में शिक्षा का प्रसार अवष्य हो रहा है परन्तु उनके लिए आवश्यक सुविधायें उपलब्ध नहीं हैं। ग्रामीण शालाओं में छात्र–छात्राओं की संख्या अधिक न होने का महत्वपूर्ण कारण ग्रामीण का दूर स्थित होना है इस वजह से अनेक बालक बालिकायें या तो शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, या फिर उनकी शिक्षा प्राथमिक शालाओं तक ही सीमित होकर रह जाती है। केवल वे ही बालक, बालिकायें शिक्षित हो पाते हैं जिनके गाँवों में माध्यमिक तथा हाईस्कूल तक की शालाओं की सुविधाएँ उपलब्ध हों।''

इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षाको बढ़ावा देने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश संदेश ने संपादकीय में अनेक टिप्पणियाँ की।

स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश संदेश ने संपादकीय के माध्यम से कुछ सुझाव भी प्रेषित किए अखबार ने लिखा– स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए छात्रावासों के संचालन के लिए कार्य किये जाने चाहिए। छात्र–छात्राओं के माता–पिता का विश्वास और आदर प्राप्त करने के लिए सार्वजनिक कार्यों में रुचि लेने वाली शिक्षित महिलाओं से छात्रावास के संचालन कार्य के लिए सहायता प्राप्त करना चाहिए ताकि ग्रामीण परिवारों में बालक–बालिकाओं को शिक्षा प्राप्ति के लिए भेजा जा सके। जरुरतमंद अविभावकों के लिये सहायता राशि भी रियासत की ओर से भेजा जाना चाहिए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्र में नई चेतना आयी, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक जगत् ने अंगड़ाई ली। सुशुप्त कुंठित चेतनाएँ जागरित हुई। जिसने नव–निर्माण हेतु संघर्ष–रत होने की प्रेरणा दी। समाचार पत्रों के माध्यम से भारतवासियों के मन में स्वाभिमान, आत्मरक्षा का भाव, अस्तित्व के लिए उद्बोधन और बौद्धिक क्षमता के सम्यक विकास का भाव भरा। राष्ट्र के समग्र विकास के लिए समर्पित समाचार पत्रों ने संजीवनी बूटी का कार्य किया। नवोदित देश के लिए समाचार पत्र प्राणधारा बन गये।

अध्ययन के उद्देश्य

हिन्दी समाचार पत्रों की भूमिका का समाज पर सूक्ष्म अध्ययन जिससे यह ज्ञात हो सके कि आईना दिखाने वाली पत्रकारिता की वर्तमान में क्या प्रासंगिकता

है? म.प्र. के समाचार पत्रों के इतिहास और विकास को समझना। म.प्र. के समाजिक विकास में समाचार पत्रों के योगदान को रेखांकित करना। समाचार पत्रों के समाज पर पड़ रहे प्रभाव और इनकी विश्वसनीयता के स्तर का सूक्ष्म अध्ययन करना एवं वास्तविक तथ्यों को सामने लाना अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है।

निष्कर्ष

समाचार पत्रों में जीवन के यथार्थ को अधिकाधिक रुप से समाज में प्रभावित करने की जो क्षमता होती है यदि उसमें पूर्ण सच्चाई हो तो उस क्षमता को और भी बल मिलता है और अनिवार्यतः समाज उससे प्रभावित होता है। परिणामतः व्यक्ति का निर्णय और उसका चिन्तन परिवर्तित हो जाता है। पत्र–पत्रिकाओं के विषय कुछ भी हों पर उनमें तथ्य और सत्य की संगति होनी चाहिए। इस प्रकार समाचार–पत्रों का मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्ति से सीधा–संपर्क जुड़ता है।

समाचार पत्रों में घटित घटनाओं के लेखा–जोखा के साथ घटना के कारणों, उसकी प्रति–क्रियाओं और उनकी शांति के लिए हो रहे उपायों का वर्णन किया जाता है। इन जानकारियों के माध्यम से समाचार पत्र समाज को सचेत करती हैं। अखबार आज के युग की लोक गुरु हैं। इस रुप में अखबार आम–आदमी को उसके कर्त्तव्यों का बोध कराती हैं। शासक वर्ग को सतर्क करती हैं। प्रजातंत्र में समाचार पत्रों को निर्भीकता का बल मिलता है। देषी भाषाओं के समाचार–पत्रों ने लोक चेतना को जागृत करने का जो कार्य किया उसी से राष्ट्रीय आन्दोलन को इतनी सशक्तता प्रदान हुई। इसमें कोई संदेह नहीं है कि समाचार पत्र समाज को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। समाज के आदर्शों का संवहन करने वाले अखबारों की भूमिका समाज के अग्रदूत के रुप में प्रषंसनीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *एन.सी.पंत, हिन्दी पत्रकारिता का विकास, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, वर्ष 1994, पृष्ठ संख्या–267.*
2. *रामलखन शुक्ल, आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वन निदेशालय, दिल्ली, वर्ष 2008, पृष्ठ संख्या–154.*
3. *एन.सी.पंत, हिन्दी पत्रकारिता का विकास, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, वर्ष 1994, पृष्ठ संख्या–268.*
4. *डॉ. महेश शुक्ला, विंध्य की पत्रकारिता के विविध आयाम, कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली, वर्ष 2001, पृष्ठ संख्या–154.*
5. *शिव अनुराग पटैरिया, डॉ. राकेश पाठक, हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, वर्ष 2016, पृष्ठ संख्या–98*
6. *डॉ. महेश शुक्ला, विंध्य की पत्रकारिता के विविध आयाम, कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली, वर्ष 2001, पृष्ठ संख्या–162*
7. *'जनजागृति' 25 अगस्त 1956, सम्पादक श्री ना.प्र. आजाद, श्री शील कुमार निगम, श्री बी.एल.मेहता, श्री श्याम कुमार आजाद।*
8. *विभाष कुमार झा, हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, वर्ष 2011, पृष्ठ संख्या–41*
9. *मध्यप्रदेश में पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास, विजयदत्त श्रीधर, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, वर्ष 1989, पृष्ठ संख्या–53*
10. *मध्यप्रदेश संदेश 27 अगस्त 1966, अंक 38, प्रकाशन वर्ष 61, ग्वालियर, शनिवार, पृष्ठ संख्या–14*
11. *डॉ. सुरेन्द्र पाठक हिन्दी पत्रकारिता और समाज निर्मल पब्लिकेशन (इंडिया) दिल्ली, वर्ष 2017, पृष्ठ संख्या–7*